स्नातकोत्तर अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार डिप्लोमा

(आगरा एवं दिल्ली केंद्र)

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और दिल्ली

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)

स्नातकोत्तर अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार डिप्लोमा

प्रश्नपत्र - 1	अनुवाद और भाषाविज्ञान	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 2	अनुवाद सिद्धांत	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 3	व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और अनुवाद	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 4	अनुवाद का व्यवहारिक संदर्भ	पूर्णांक - 100
प्रश्नपत्र - 5	परियोजना कार्य और सत्रीय कार्य	पूर्णांक - 100

प्रश्नपत्र- 1

अनुवाद और भाषाविज्ञान

पूर्णांक : 100

उद्देश्यः

विद्यार्थीः

1. भाषा की प्रकृति, उसके स्वरूप एवं प्रमुख घटकों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. भाषाविज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के अंतर्संबंध को समझकर इसमें मुख्य अनुप्रायोगिक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. भाषाविज्ञान तथा अनुवाद के अंतर्संबंध के बारे में जान सकेंगे।
4. भाषा की अर्थ संरचना के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
5. भाषा अध्ययन के सामाजिक संदर्भ से जुड़े विभिन्न पक्षों का व्यापक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
6. अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में लिपि एवं लिप्यंतरण की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

1. भाषा की प्रकृति और विश्लेषण

(क) भाषा की परिभाषा और उसका स्वरूप, भाषा - प्रतीक व्यवस्था तथा सामाजिक संस्था के रूप में, भाषा और वाक् (सस्यूर के संदर्भ में)। भाषा व्यवस्था और व्यवहार (चाम्स्की के संदर्भ में)। भाषा के प्रमुख घटक : स्वनिम विज्ञान, रूपिम विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान एवं प्रोक्ति।

(ख) भाषाविज्ञान तथा अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान : मुख्य अनुप्रायोगिक क्षेत्र- अनुवाद, भाषा शिक्षण, कोश विज्ञान, शैली विज्ञान आदि।

(ग) भाषा अध्ययन के प्रमुख क्षेत्रः स्वनिम विज्ञान, रूपिम विज्ञान, वाक्य विज्ञान; अर्थ विज्ञान, भाषाविज्ञान तथा अनुवाद का अंतःसंबंध।

2. भाषा की आर्थी संरचना

(क) शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ की संकल्पना, अर्थ के प्रकार।
अर्थ के आयाम : एकार्थता, अनेकार्थता, पर्यायता, विलोमता।

(ख) कोशविज्ञान और कोश निर्माण प्रक्रिया : शब्दकोश से तात्पर्य, कोशों के प्रमुख प्रकार- एक भाषी कोश, द्विभाषी कोश, परिभाषा कोश, पदबंध कोश, पर्याय कोश, साहित्य कोश, विश्व कोश, ई-कोश, लोकोक्ति और मुहावरे कोश, अनुवाद में कोश की उपयोगिता।

3. भाषा का सामाजिक संदर्भ

(क) हिंदी के सामाजिक और क्षेत्रीय रूप

भाषा और बोली, हिंदी की प्रमुख बोलियाँ, भाषा एवं शैली : हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी के रूप में शैली भेद, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी।

(ख) हिंदी का जनपदीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ और इनमें अनुवाद की भूमिका

(ग) हिंदी के प्रयुक्ति रूप

प्रयुक्ति से तात्पर्य, प्रयुक्ति के निर्धारक तत्व, अनुवाद के संदर्भ में हिंदी की प्रयुक्तियाँ, सामान्य व्यवहार की हिंदी, प्रशासनिक हिंदी और साहित्यिक हिंदी।

4. भारत की भाषाई स्थिति

(क) द्विभाषिकता/बहुभाषिकता : बहुभाषिकता के प्रकार- बहुभाषी समाज, भारतीय भाषा समाज और अनुवाद

(ख) हिंदी का मानकीकरण और अनुवाद

(ग) हिंदी का आधुनिकीकरण और अनुवाद

5. लिपि और लिप्यंतरण

लिपि एवं लिप्यंतरण से तात्पर्य; सामान्य अनुवाद और लिप्यंतरण में अंतर, स्वनिमिक लिप्यंतरण और स्वनिक लिप्यंतरण में अंतर; लिप्यंकन और लिप्यंतरण में अंतर। अनुवाद में लिप्यंतरण की आवश्यकता।

<u>नोट</u> :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. समसामयिक भाषा विज्ञान, प्रो. वैश्ना नारंग, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008
2. भाषाविज्ञान की भूमिका, देवेंद्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
3. आधुनिक भाषाविज्ञान, कृपाशंकर सिंह तथा चतुर्भुज सहाय, वाणी प्रकाशन, 2010
4. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, श्रीवास्तव, तिवारी एवं गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1980
5. भाषाविज्ञान सिद्धांत और प्रयोग, अंबा प्रसाद 'सुमन', सस्ता साहित्य भंडार, 1982
6. भाषा एवं समाज, प्रो. भरत सिंह, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 2002
7. हिंदी का सामाजिक संदर्भ, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और रमानाथ सहाय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, 2008 (संपादित)
8. हिंदी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य : के.के. गोस्वामी, साहित्य सहकार, दिल्ली, 2009

प्रश्नपत्र- 2
अनुवाद सिद्धांत

पूर्णांक : 100

उद्देश्यः

विद्यार्थी :

1. अनुवाद के स्वरूप एवं प्रकृति से जुड़े विभिन्न पहलुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा विभिन्न संदर्भों में अनुवाद के महत्व एवं प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
2. अनुवाद की प्रक्रिया का विस्तार एवं गहराई से अध्ययन करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया में मॉडलों एवं प्रासंगिक विषयों की जानकारी हासिल कर सकेंगे।
3. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के बारे में समझ सकेंगे साथ ही अनुवाद की सीमाओं से परिचित हो सकेंगे।
4. अनुवाद से जुड़ी 'अननुवादनीयता' 'पुनरीक्षण' मूल्यांकन, आशु अनुवाद जैसी विशिष्ट अवधारणाओं का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

1. अनुवाद की प्रकृति

(क) अनुवाद : अर्थ और परिभाषा स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा : अनुवाद का स्वरूप, व्यापक एवं सीमित स्वरूप।

(ख) कला, विज्ञान और कौशल के रूप में अनुवाद, अनुवाद का महत्व और प्रासंगिकता।

2. अनुवाद की प्रक्रिया

(क) अनुवाद-प्रक्रिया के तीन चरण : (i) पाठक की भूमिका और अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया (ii) द्विभाषिक की भूमिका और अर्थांतरण की प्रक्रिया तथा (iii) रचयिता की भूमिका और संप्रेषण की प्रक्रिया।

(ख) समतुल्यता का सिद्धांत

(ग) विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन (नाइडा, न्यूमार्क, बाचगेट के संदर्भ में), अनुवाद में अनुवादक की भूमिका- पाठक की भूमिका- पाठक, द्विभाषिक और रचियता।

3. अनुवाद के प्रकार

शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छाया अनुवाद, पूर्ण तथा आंशिक अनुवाद, समग्र एवं परिसीमित अनुवाद, पद्यानुवाद तथा गद्यानुवाद, सारानुवाद, पाठ्यधर्मी अनुवाद, प्रभावधर्मी अनुवाद।

4. मशीनी अनुवाद : अवधारणा एवं प्रक्रिया, प्रकार, पद्धतियाँ, भारत में मशीनी अनुवाद।

5. अनुवाद की सीमाएँ तथा अननुवादनीयता

सीमाएँ: भाषा-भाषापरक सीमाएँ, सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ, पाठपरक सीमाएँ।

अननुवादनीयताः

अननुवादनीयता से तात्पर्य, अननुवादनीयता के विभिन्न आयाम-विषय वस्तु तथा अभिव्यक्ति के स्तर पर अननुवादनीयता।

6. अनुवाद पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा

(क) अनुवाद का पुनरीक्षण : पुनरीक्षण से तात्पर्य, पुनरीक्षण की प्रक्रिया, पुनरीक्षण का महत्व।

(ख) अनुवाद का मूल्यांकन : मूल्यांकन से तात्पर्य, अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

(ग) अनुवाद की समीक्षा : अनुवाद समीक्षा का स्वरूप, अनुवाद समीक्षा की प्रकृति (वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा तथा तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा)।

(घ) अनुवाद पुनरीक्षण, समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर।

7. अनुवाद और आशु अनुवाद

आशु अनुवाद से तात्पर्य, आशु अनुवाद के विभिन्न क्षेत्र, आशु अनुवाद की आश्यकता।

आशु अनुवाद का सामान्य अनुवाद से संबंध, आशु अनुवाद की आंतरिक प्रक्रिया।

आशु अनुवाद की प्रमुख विशेषताएँ, सीमाएँ और संभावनाएँ।

8. अनुवाद की समस्याएँ :

(क) साहित्यिक अनुवाद : कविता, नाटक, कहानी आदि

(ख) कार्यालयीन अनुवाद : वाणिज्य, बैंकिंग, वैज्ञानिक तकनीकी, जनसंचार

नोट :-

सभी ईकाईयों से -

- **कुल चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **कुल चार लघु उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. अनुवाद कला, कैलाश चंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1985
2. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, श्रीवास्तव एवं गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, 1985
3. अनुवाद विज्ञान की भूमिका : के.के. गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, 2008
4. अनुवाद सिद्धांत की रूप रेखा, सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, 2011
5. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, डॉ. नगेंद्र (सं.) हिंदी माध्यम का कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली, 1993
6. Translation & Interpreter – Ravinder Gargesh & K.K. Goswami, Orient Language, New Delhi.
7. Machine Translation- Theoretical Methodological issues Nishenburg, cambridge University Press.

प्रश्नपत्र- 3

व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और अनुवाद

पूर्णांक : 100

उद्देश्यः

विद्यार्थीः

1. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान की सैद्धांतिक अवधारणा, व्यतिरेकी विश्लेषण के प्रकार्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और अनुवाद में परस्पर संबंधों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में व्यतिरेकी विश्लेषण से जुड़े विविध अध्ययन बिंदुओं से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे साथ ही अनुवाद के दौरान व्यावहारिक अनुप्रयोग भी सीख सकेंगे।

पाठ्यवस्तु-

(क) सैद्धांतिक पक्ष **60**

1. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान

(i) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान का अर्थ, स्वरूप और विकास

(ii) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान के प्रकार - रूपपरक और संदर्भपरक

(iii) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान और अनुवाद का संबंध

2. व्यतिरेकी आयाम : अंग्रेजी-हिंदी संदर्भ में

(i) अंग्रेजी-हिंदी संरचना के शब्दवर्ग- संज्ञा (लिंग, वचन, पुरुष), सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय (क्रिया विशेषण)

(ii) अंग्रेजी-हिंदी संरचना में काल, पक्ष, वृत्ति आदि

(iii) अंग्रेजी आर्टिकल (a, an, the) का हिंदी में रूपांतर

(iv) अंग्रेजी-हिंदी क्रिया (अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक) का व्यतिरेक

(v) अंग्रेजी-हिंदी की कारक व्यवस्था और पूर्वसर्गों और परसर्गों का व्यतिरेक

(vi) 'It' and 'There' की संरचनागत विशेषताएँ

(vii) अंग्रेजी की अपूर्ण क्रिया 'To be' और 'हिंदी की होना' क्रिया का व्यतिरेक

(viii) Tag questions की स्थिति और हिंदी में व्यतिरेक

(ix) कर्ता-क्रिया तथा कर्म-क्रिया की अन्विति

(x) अंग्रेजी-हिंदी में वाच्चीकरण (Voicing)

(xi) अंग्रेजी-हिंदी में प्रेरणार्थीकरण (Causativization)

(xii) अंग्रेजी-हिंदी में निजवाचकता (Reflexivization)

(xiii) अंग्रेजी-हिंदी में संबंधवाचकता (Relativization)

(xiv) अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के संदर्भ में संरचनाओं का विश्लेषण-ध्वनि, लिपि, शैली और संस्कृति के स्तर पर

(ख) व्यावहारिक पक्ष 40

(i) अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते हुए उनका व्यतिरेकी विश्लेषण

(ii) अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में पाँच-पाँच वाक्यों का अनुवाद करते हुए उनका व्यतिरेकी विश्लेषण

<u>नोट</u> :-

खंड (क) की प्रत्येक ईकाई से -

- **दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा।**
- **चार लघु उतत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

खंड (ख) से - (I) अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते हुए उनका व्यतिरेकी विश्लेषण करना होगा। यह 20 अंक का होगा।

(II) अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में पाँच-पाँच वाक्यों का अनुवाद करते हुए उनका व्यतिरेकी विश्लेषण करना होगा। यह भी 20 अंक का होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. अनुवाद का व्याकरण (अंग्रेजी-हिंदी व्यतिरेकी विश्लेषण) सूरजभान सिंह, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
2. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, विजय राघव रेड्डी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

3. अंग्रेजी-हिंदी संरचना, व्यतिरेकी विश्लेषण, रमेशचंद्र शर्मा, अक्षरश्री प्रकाशन, दिल्ली, 1999
4. अनुवाद विज्ञान की भूमिका कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
5. प्रयोग और प्रयोग, वी.रा. जगन्नाथन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1981

प्रश्नपत्र- 4

अनुवाद का व्यावहारिक संदर्भ

पूर्णांक : 100

उद्देश्यः

विद्यार्थीः

1. पारिभाषिक शब्द एवं शब्दावली की संकल्पना, इसके निर्माण की प्रक्रिया एवं सिद्धांत, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण से जुड़े विभिन्न मत-संप्रदायों के विचारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की उपादेयता और इसके उपयोग से जुड़े विभिन्न पक्षों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. व्यावहारिक अनुवाद के दौरान विभिन्न विषय-क्षेत्रों से जुड़ी पारिभाषिक एवं विशिष्ट शब्दावली के प्रयोग की बारीकियों को समझ सकेंगे।

निर्देश- अनुवाद के व्यावहारिक संदर्भ की परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी के शब्दों, वाक्यों, अनुच्छेदों तथा मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद दिए जाएँगे। पारिभाषिक शब्दावली पर एक सैद्धांतिक प्रश्न अनिवार्य होगा।

पाठ्यवस्तु-

(क) पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद **20**

(i) सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द

(ii) पारिभाषिक शब्दावली की संकल्पना (अर्थ और स्वरूप)

(iii) पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया और सिद्धांत

(iv) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के संप्रदाय

(v) निर्धारित पारिभाषिक शब्दावली और अभिव्यक्तियाँ

(x) अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की उपादेयता

(ख) व्यावहारिक अनुवाद **80**

अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी (लगभग 300 शब्द)

(i) सर्जनात्मक साहित्य (कविता, नाटक, कथा साहित्य आदि)

तथा

ज्ञान साहित्य-कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, वाणिज्यिक, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, दर्शन आदि के अनुच्छेद का अनुवाद (लगभग 300 शब्द)

40 (20+20)

(ii)	सामान्य और तकनीकी वाक्यों का अनुवाद	20 (10+10)
(iii)	सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी और हिंदी समतुल्य	10 (5+5)
(iv)	मुहावरों और लोकोक्तियों के अंग्रेजी और हिंदी रूप	10 (5+5)

नोट

खंड (क) से -

- **चार लघु उत्तरीय प्रश्न विकल्प के साथ पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का होगा।**

प्रश्नपत्र- 5

परियोजना कार्य और सत्रीय कार्य

पूर्णांक : 100

पाठ्यवस्तु-

(क) परियोजना कार्य **50**

25-30 पृष्ठों का अंग्रेजी से हिंदी अथवा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद

(ख) सत्रीय कार्य **25**

कक्षा में अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में 30 (15-15) अनुच्छेद अभ्यास कराए जाएँगे। इनमें से सबसे अच्छे 20 (10+10) अभ्यासों पर 25 अंकों का मूल्यांकन किया जाएगा।

(ग) मौखिकी **25**

निर्देशः

1. परियोजना की सामग्री का निर्धारण संस्थान द्वारा किया जाएगा।
2. अनूदित सामग्री की फुलस्केप कागज पर डबल स्पेस में तीन टंकित प्रतियाँ निर्धारित तिथि तक कार्यालय मे जमा करानी होंगी।
3. टंकण से संबंधित सभी व्यय छात्र को ही वहन करने होंगे।